मुहम्मद गौरी (मोहम्मद गौरी)

गजनी और हिरात के मध्य गौर नामक एक छोटा सा राज्य था। यहाँ गौरी वंश का उदय हुआ था। महमूद गजनवी ने गौर राज्य पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। जब महमूद की मृत्यु हो गई तो उसके निर्बल उत्तराधिकारी गौर राज्य पर अपना नियंत्रण नहीं रख सके। परिणामस्वरूप गौर शासक स्वतंत्र हो गए। 1173 ई० में गयासुद्दीन महमूद (गौर राज्य का शासक) ने गजनी पर आक्रमण किया और उसपर स्थायी रूप से अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। इसके बाद उसने मुहम्मद गौरी को वहाँ का शासक नियुक्त कर दिया। सर्वप्रथम मुहम्मद गौरी ने गजनी पर अपना राज्य सुदृढ़ किया और फिर भारत पर विजय का निश्चय किया।

मुहम्मद गौरी के भारत पर आक्रमण के कारण —

भारत पर वह साम्राज्य विस्तार करना चाहता था। उसे सैनिक यश और धन तथा शक्ति प्राप्त करना था।

गौरी ने धन प्राप्त करने के लिए स्थायी शासन स्थापित करने की योजना बनाई।

उत्तर भारत की राजनीतिक दशा इसके अनुकूल होना था। जयचंद का आमंत्रण भी मिल चुका था।
पंजाब को वह अपना प्रदेश समझता था क्योंकि वह गजनी शासन में रह चुका था।

गोरी के भारत पर आक्रमण –

गोरी ने सबसे पहले 1175-76 में मुल्तान और कच्छ पर आक्रमण किया तथा आसानी से विजय प्राप्त कर ली। इसके बाद उसने 1178-79 में गुजरात पर आक्रमण किया, परंतु उसका सामना नहरवाला में अन्हिलवाड़ा के नरेश मूलराज सोलंकी से हुआ जिसने गोरी को पराजित किया। इसके बाद गोरी ने 1179-82 ई० के बीच पेशावर और लाहौर पर सफल आक्रमण किया।
पंजाब पर गजनी का शासक खुसरो मलिक शासन कर रहा था। यहाँ से गोरी संधि करके वापस चला गया। मुहम्मद गोरी ने 1185-86 में पुनः पंजाब पर आक्रमण किया और अंतिम रूप से जीत हासिल की।

तराइन का प्रथम युद्ध–

पंजाब की विजय से मुहम्मद गोरी के राज्य की सीमाएं अजमेर

अब दिल्ली के राजा पृथ्वीराज चौहान के राज्य से मिलने लगी। 1189 ई० में मुहम्मद के भटिंडा पर आक्रमण से पृथ्वीराज चौहान चिंतित हुआ। क्योंकि यह राज्य चौहान की सीमा में आता था। मुहम्मद गोरी भटिंडा को आसानी से जीतकर वापस चला गया। जब पृथ्वीराज को इसकी सूचना मिली तो उसने भटिंडा को पुनः हस्तगत करने के लिए सैनिक घेरा डाल दिया। करीब 100 राजपूत राजाओं ने पृथ्वीराज की अधीनता में एक सेना बनाया। 1191 ई० में थानेश्वर से 14 मील दूर तराइन के मैदान में दोनों सेनाओं में मुठभेड़ हुई। इस युद्ध में मुहम्मद गोरी की पराजय हुई।

इसके बाद पृथ्वीराज 13 माह तक भटिंडा के किले का घेरा डाले रहा तब कहीं उसे युद्ध करना पड़ा। इस युद्ध की विजय भारत के लिए गौरव की बात थी लेकिन पृथ्वीराज की उदारता तथा अदूरदर्शिता उसे महँगी पड़ी। इस बीच गोरी ने अपनी हार का बदला लेने की तैयारी की और पुनः आक्रमण किया।

द्वितीय तराईन युद्ध -

मुहम्मद गोरी अपनी हार और अपमान से बौखलाया हुआ था अब उसने पहले से अधिक तैयारी के साथ सेना आदि लेकर 1192 ई० में बदला लेने के लिए और मुस्लिम हैंसों को पाने के लिए आक्रमण की योजना बनाई। उसने इस युद्ध में छल की नीति का पालन किया।

जब गोरी लाहौर पहुंचा तब उसने चौहान नरेश के पास एक दूत से संदेश भेजवाया कि युद्ध से बचने के लिए वह इस्लाम स्वीकार कर ले और सुल्तान की अधीनता स्वीकार करले। पृथ्वीराज ने प्रत्युत्तर में कहलवाया कि राजपूत पलायन करती हुई सेना को अभयदान देने के अभ्यस्त है, यदि सेना और अपने प्राणों की रक्षा करना हो तो गोरी को वापस हो जाना चाहिए।

पृथ्वीराज इस चालाकी को समझ नहीं पाया। इस संदेश की आड़ में गोरी तराइन तक पहुंच गया। जब वह युद्ध के लिए तराईन पहुंचा तो गोरी मोर्चा जमा चुका था। गोरी ने अपना केन्द्र उसके सामने रखा, उसके पीछे रिजर्व सेना, उसके आगे घुड़सवार

और सबसे आगे बांये, दांये, मध्य भाग में बैठे सैनिक थे। इसके अतिरिक्त युद्धस्थल के राजपूतों के बांये, दांये अश्वारोही न दिखने वाली दूरी पर थे।

राजपूत बिना सिर्फ सेना के बांये-दांये और मध्य में बैठे पैदल के व्यूह में लड़ने आगे बढ़े। यद्यपि पृथ्वीराज के साथ कुछ अन्य राजपूत राजा साथ थे, परंतु अन्त में पृथ्वीराज की पराजय हुई और उसे बन्दी बनाकर गजनी ले जाया गया और उसे अन्धा कर दिया गया।

~~तराईन का युद्ध~~ तराईन का दूसरा

युद्ध इतिहास में निर्णायक युद्धों में से एक है। इसने न केवल चौहानों की साम्राज्यिक शक्ति को नष्ट कर दिया बल्कि सम्पूर्ण हिन्दुस्तान पर भारी विपत्ति ढाह दी।

चौहान शक्ति टूट जाने के बाद उसने हाँसी, सिरसा, कुहराम, समन आदि पर बड़ी आसानी से अपना अधिकार कर लिया। पृथ्वीराज के पुत्र गोविंदराज को अजमेर के ऊपर अपनी अधीनता में राज्य करने का अधिकार दे दिया। दिल्ली का राज्य इसी प्रकार तोमरवंश को सौंप दिया गया। इन्द्रप्रस्थ में उसने अपने विश्वास-पात्र सहायक कुतुबुद्दीन ऐबक के नेतृत्व में एक सेना रख दी, जिसका काम हिन्दू शासकों

शासकों से संधि की शर्तों को मनवाना था। गोरी गजनी वापस लौट गया। इसके जाने के बाद अजमेर तथा दिल्ली में छिटपुट विद्रोह हुए किन्तु ऐबक ने उन्हें दबा दिया।

कन्नौज के पर आक्रमण - (चन्दावर का युद्ध) -

1194 ई० में गोरी ने पुनः भारत पर आक्रमण किया। इस आक्रमण का उद्देश्य गाहड़वाल नरेश जयचंद को पराजित करना था, जो कन्नौज तथा बनारस का शासक था। पृथ्वीराज के मुहम्मद गोरी के साथ युद्ध में जयचंद तटस्थ रहा तथा उसने चौहान नरेश की कोई मदद नहीं की। चन्दावर (कन्नौज के पास) नामक स्थान पर जयचंद के साथ उसका युद्ध हुआ, जिसमें हिन्दू शासक की पराजय हुई। तुर्कों की विजय हुई। विजेता गोरी ने बनारस पर अधिकार कर लिया, जहाँ उसे एक भारी खजाना मिला। इसके बाद कुछ अन्य प्रमुख नगरों पर भी उसका अधिकार हो गया। इस विजय के परिणामस्वरूप तुर्क साम्राज्य बिहार की सीमा तक जा पहुँचा।

बयाना का घेरा -

1195-96 ईस्वी में मुहम्मद गोरी ने भारत पर पुनः आक्रमण किया तथा बयाना का घेरा डाला। यहाँ भी उसे विजय मिली। यहाँ भी राजपूत शासक कुमारपाल की राजधानी थी। यहाँ की रक्षा का भार बहाउद्दीन तुगरिल को

दे सौंप दिया गया। 1197 ई० में उसने गुजरात पर आक्रमण किया तथा चालुक्य राजा भीम द्वितीय की राजधानी अन्हिलवाड़ा पर अधिकार कर लिया।

गोरी 1206 ई० में भारत से गजनी वापस लौट रहा था अतः वापस जाते हुए सिंधु नदी के तट पर खोखर नामक लड़ाकू जातियों द्वारा मार डाला गया।

प्रभाव —

मुहम्मद गोरी के आक्रमणों का प्रभाव यह हुआ कि भारत में तुर्की शासन की सत्ता कायम हो गई।

पृथ्वीराज चौहान की पराजय के कारण दिल्ली पर इस्लामी सत्ता जम गई। भारतीय राजपूतों की शक्ति, वीरता तथा बुद्धि की पोल खुल गई।